

मुस्लिम कालीन शिक्षा
(EDUCATION IN MUSLIM PERIOD)
(1200—1757)

"There cannot be said to have been any systematic and consistent educational policy among the Muslim kings before the Mughals."
—T. N. Siqueira.

विषय-प्रवेश

भारत की अतुलित सम्पत्ति से आकृष्ट होकर, मुसलमानों ने इस देश पर आठवीं शताब्दी में अपने आक्रमण प्रारम्भ कर दिये थे। किन्तु, उनके आक्रमणों का असली तूफान महमूद गजनी के समय में आरम्भ हुआ, जिसने सन् 1,000 ई० से 1,026 ई० तक भारत पर लगभग 17 आक्रमण किये। उसके आक्रमणों का मुख्य ध्येय—इस देश की सम्पत्ति को लूटकर गजनी को वैभवशाली बनाना था, न कि यहाँ मुस्लिम शासन की स्थापना करना। अतः वह प्रत्येक आक्रमण के बाद लूट का माल लेकर स्वदेश को लौट जाता था।

महमूद गजनी के बहुत समय पश्चात् सन् 1192 ई० में मुहम्मद गौरी ने दिल्ली के अन्तिम राजपूत राजा, पृथ्वीराज चौहान को पराजित करके, भारत में मुस्लिम शासन का शिलान्यास किया। उसकी मृत्यु के उपरान्त, भारत पर क्रमशः गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैयद, लोदी और मुगल वंश ने सन् 1757 ई० तक शासन किया। उस वर्ष क्लाइव ने प्लासी के युद्ध में विजयी होकर भारत में अंग्रेजी शासन का इतिहास आरम्भ किया।

इस प्रकार, लगभग 550 वर्ष तक भारत पर मुसलमानों का आधिपत्य रहा। उन्होंने यहाँ एक नवीन शिक्षा-प्रणाली का सूत्रपात किया, जिसे **"मध्यकालीन मुस्लिम-शिक्षा प्रणाली"** कहा जा सकता है। इस प्रणाली के विषय में अपना मत व्यक्त करते हुए **डॉ० एफ० ई० केई** ने लिखा है—**"मुस्लिम शिक्षा एक विदेशी प्रणाली थी, जिसका भारत में प्रतिरोपण किया गया और जो ब्राह्मणीय शिक्षा से अति अल्प सम्बन्ध रखकर, अपनी नवीन भूमि में विकसित हुई।"**

शिक्षा के उद्देश्य व आदर्श
(AIMS & IDEALS OF EDUCATION)

मुसलमानों ने भारत पर अनेक शताब्दियों तक शासन किया, पर इस सम्पूर्ण अवधि में

Scanned with CamScanner

उनकी स्थिति अपनी और अपने राज्य की सुरक्षा के लिए सशस्त्र सैनिकों की-सी थी। ऐसी स्थिति में उनका ध्यान, शिक्षा पर पूर्णरूप से केन्द्रित न होना, कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। फिर, जिन मुस्लिम शासकों का भारत पर आधिपत्य रहा, उनमें से कुछ उदार एवं सहिष्णु और कुछ अनुदार एवं असहिष्णु थे। उदाहरणार्थ, बख्तियार अलाउद्दीन, फिरोज तुगलक और औरंगजेब इतने कट्टर और अनुदार थे कि उनका एकमात्र ध्येय हिन्दुओं की शिक्षा और संस्कृति के केन्द्रों का विनाश करके, मुस्लिम शिक्षा और संस्कृति का प्रसार करना था। इसके विपरीत, अल्तमश, मुहम्मद तुगलक, अकबर और शाहजहाँ के समान कुछ ऐसे मुस्लिम शासक भी थे, जिन्होंने शिक्षा के प्रति अगाध रुचि प्रकट की और उसे अपना संरक्षण प्रदान करके, उसके विस्तार में प्रशंसनीय योग दिया।

शिक्षा के प्रति मुस्लिम शासकों के इन विरोधी दृष्टिकोणों के कारण सम्पूर्ण मुस्लिम युग में शिक्षा के उद्देश्यों और आदर्शों में समरूपता नहीं मिलती है। परन्तु फिर भी, इस्लाम धर्म के सच्चे बन्दे होने के कारण सभी मुसलमान शासकों ने शिक्षा के कुछ ऐसे उद्देश्य और आदर्श निर्धारित किये, जिनमें निश्चित एकरूपता थी। हम इन उद्देश्यों और आदर्शों का संक्षिप्त विवरण लेखबद्ध कर रहे हैं; यथा—

1. ज्ञान का प्रसार (Spread of Learning)—मुस्लिम-शिक्षा का पहला उद्देश्य इस्लाम धर्म के अनुयायियों में ज्ञान का प्रसार करना था। मुहम्मद साहब ने ज्ञान को अमृत बताया था और कहा था कि ज्ञान ही निजात अर्थात् मुक्ति का साधन है। ज्ञान के प्रकाश में आलोकित होकर ही व्यक्ति—धर्म और अधर्म, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य में अन्तर कर सकता है। अतः अपने अनुयायियों को मुहम्मद साहब का उपदेश था—**"दान में धन देने की अपेक्षा अपने बच्चों को शिक्षा देना कहीं अधिक अच्छा है। छात्रों के कलम की स्याही, शहीदों के खून से भी अधिक पवित्र है।"**

मुहम्मद साहब के इस उपदेश को कार्य-रूप में परिणत करना, मुस्लिम शासकों ने अपना सर्वश्रेष्ठ कर्त्तव्य माना। अतः उन्होंने मुसलमानों के मस्तिष्क को ज्ञान के आलोक से प्रकाशित करने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया।

2. इस्लाम का प्रसार (Spread of Islam)—मुस्लिम-शिक्षा का दूसरा उद्देश्य इस्लाम का प्रसार करना था। मुसलमान अपने धर्म का विस्तार करना अपना पवित्र कर्त्तव्य मानते हैं। उनका विश्वास है कि काफिरों से इस्लाम धर्म को अंगीकार करवाने वाला मुसलमान, गाजी होता है। इस विश्वास से प्रेरित होकर मुसलमान शासकों ने विभिन्न विधियों का प्रयोग करके, भारत के कोने-कोने में इस्लाम धर्म को फैलाने का प्रयत्न किया।

इन विधियों में से एक विधि थी—शिक्षा के द्वारा व्यक्तियों को इस्लाम के सिद्धान्तों से अवगत कराना। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए देश के विभिन्न स्थानों में मकतबों और मदरसों की स्थापना की गई, जिनमें धार्मिक शिक्षा का स्थान सर्वोपरि था। मकतबों में कुरान की आयतों को कण्ठस्थ करना अनिवार्य था। मदरसों में दर्शन, साहित्य और इतिहास की शिक्षा धार्मिक सिद्धान्तों के आधार पर दी जाती थी। अतः जैसा कि **डॉ० यूसुफ हुसैन** ने लिखा है—**"मुस्लिम शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति—धर्म की पृष्ठभूमि में बोलते और विचार करते थे।"**

3. मुस्लिम संस्कृति का प्रसार (Spread of Muslim Culture)—मुस्लिम शिक्षा का तीसरा उद्देश्य—मुस्लिम संस्कृति का प्रसार करना था। मुसलमान, भारत में दूसरे देशों से आए थे। अतः उनकी और हिन्दुओं की संस्कृति में प्रत्येक दृष्टि से विषमता थी। इस विषमता

Scanned with CamScanner

का अन्त करने के लिए मुसलमानों ने शिक्षा को माध्यम बनाया। उनकी धारणा थी कि वे शिक्षा के द्वारा भारतवासियों को अपनी भाषा, प्रथाओं, आचार-विचार और सामाजिक नियमों से प्रभावित करके, अपने धर्म का अवलम्बी बना लेंगे।

4. धार्मिकता का समावेश (Infusion of Religiousness)—मुस्लिम-शिक्षा का चौथा उद्देश्य—मुसलमानों में धार्मिकता का समावेश करना था। **मजूमदार, राय चौधरी व दत्त** के शब्दों में—**"भारत में मुस्लिम राज्य, धर्म-राज्य था, जिसका अस्तित्व सिद्धान्त रूप में धर्म की आवश्यकताओं के कारण उचित था।"**

धर्म की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए मुसलमानों में धार्मिकता की भावना को समाविष्ट करना अनिवार्य था। यही कारण था कि मकतबों और मदरसों को साधारणतया मसजिदों से सम्बद्ध किया गया, जहाँ प्रतिदिन सामूहिक नमाज एक सामान्य बात थी। मकतबों और मदरसों में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों में इस धार्मिक वातावरण द्वारा धार्मिकता का समावेश किया जाता था। साथ ही, उनको अपने जीवन में धर्म के महत्व और गौरव से परिचित कराया जाता था।

5. विशिष्ट नैतिकता का समावेश (Infusion of Distinct Morality)—मुस्लिम शिक्षा का पांचवाँ उद्देश्य—व्यक्तियों में इस्लाम के सिद्धान्तों के अनुसार विशिष्ट नैतिकता का समावेश करना था। इस उद्देश्य की प्राप्ति में शिक्षा से पर्याप्त सहायता मिली। मुस्लिम शिक्षा-संस्थाओं के द्वार मुसलमानों और हिन्दुओं दोनों के लिए समान रूप से खुले हुए थे। अतः शिक्षा के द्वारा उनमें मुस्लिम नैतिकता के उन आदर्शों का समावेश किया जाता था, जो हिन्दुओं के आदर्शों से पूर्णतया भिन्न थे। अनेक हिन्दुओं ने मुस्लिम शिक्षा-संस्थाओं में ज्ञान का अर्जन करके, मुस्लिम संस्कृति और जीवन-विधि में अपना विश्वास प्रकट किया।

6. चरित्र का निर्माण (Formation of Character)—मुस्लिम-शिक्षा का छठवाँ उद्देश्य—व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करना था। मुहम्मद साहब ने चरित्र के निर्माण पर अतिशय बल दिया था। उनका कहना था कि इस्लाम के सिद्धान्तों के अनुसार उत्तम चरित्र का निर्माण करके ही व्यक्ति—जीवन में सफलता हस्तगत कर सकता है। अतः मकतबों और मदरसों में छात्रों मे अच्छी आदतों और उत्तम चरित्र का निर्माण करने के लिए शिक्षकों द्वारा निरन्तर प्रयास किया जाता था।

7. सांसारिक ऐश्वर्य की प्राप्ति (Achievement of Worldly Prosperity)—मुस्लिम शिक्षा का सातवाँ उद्देश्य—व्यक्तियों को सांसारिक ऐश्वर्य प्राप्त करने के योग्य बनाना था। इस्लाम धर्म के कर्मों के अनुसार व्यक्ति के पुनर्जन्म का कोई स्थान नहीं है। अतः यह धर्म पारलौकिक जीवन की चर्चा न करके, केवल इहलौकिक जीवन का ही उल्लेख करता है। इसलिए, मुसलमानों का विश्वास है कि उनका जीवन केवल सांसारिक ही है और इसमें सभी प्रकार के सुखों एवं ऐश्वर्यों का उपभोग करना चाहिए।

मुसलमानों की इस आकांक्षा को पूर्ण करने के लिए मुस्लिम शासकों ने राज्य के निम्नतम पदों से लेकर उच्चतम पदों तक केवल सुशिक्षित व्यक्तियों को ही नियुक्त किया। इसकी पुष्टि करते हुए **जाफर** ने लिखा है—**"ज्ञान का अत्यधिक सम्मान किया जाता था और विद्वान् मनुष्यों के लिए सम्पूर्ण देश में प्रेम और सम्मान था। राज्य ने भी उनको प्रत्येक सम्भव विधि से प्रोत्साहित किया। न्यायाधीशों, कानून-वेत्ताओं और धर्माधिकारियों का इसी वर्ग के मनुष्यों में से चुनाव किया जाता था।"**

अतः यह स्वाभाविक था कि इन पदों को प्राप्त करने के लिए न केवल मुसलमान, वरन् हिन्दू भी मुस्लिम शिक्षा ग्रहण करने के लिए उत्कंठित हो गये।

Scanned with CamScanner

8. मुस्लिम श्रेष्ठता की स्थापना (Establishment of Muslim Supremacy)— मुस्लिम-शिक्षा का आठवाँ और अन्तिम उद्देश्य हिन्दुओं को मुस्लिम सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित करके भारत में मुस्लिम श्रेष्ठता को सुदृढ़ आधार पर स्थापित करना था। मुस्लिम शासक इस तथ्य से भली-भाँति अवगत थे। शिक्षा ही वह साधन था, जिसके द्वारा हिन्दुओं के विचारों और दृष्टिकोणों में आमूल परिवर्तन करके, इनको भारत में मुस्लिम शासन का दृढ़ स्तम्भ बनाया जा सकता था। अतः शिक्षा के द्वारा हिन्दुओं के मस्तिष्क में मुस्लिम आदर्शों और सिद्धान्तों को समाविष्ट करने का पूरा-पूरा उद्योग किया गया। अकबर ने अपनी शिक्षा-नीति का निर्माण मुख्यतः इसी लक्ष्य तक पहुँचने के लिए किया था।

मुगल सम्राटों से पूर्व, मुस्लिम शासकों की शिक्षा की कोई निश्चित नीति नहीं थी। वे अपनी व्यक्तिगत रुचियों और आवश्यकताओं के अनुसार, शिक्षा के उद्देश्य में समय-समय पर थोड़ा-बहुत परिवर्तन करते रहे, पर अधिकांश मुस्लिम युग में शिक्षा के उद्देश्य उपरिअंकित ही थे।